Bhawan
प्रश्न 20 भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं का वर्णन करें? (अर्थशास्त्र) उच्चस्तरीय संभावित परीक्षा-2020

उत्तर:→ वास्तव में भारत अर्द्धविकसित एवं पिछड़ा हुआ देश है, यद्यपि आर्थिक योजनाओं के अन्तर्गत भारत आर्थिक प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है, और इसकी प्रकृति विकासशील है फिर भी वास्तविकता यह है कि भारतीय अर्थव्यवस्था अभी भी पिछड़ी हुई है। भारत के पिछड़ेपन की प्रमुख विशेषताएं यह है कि यहाँ आर्थिक साधनों की प्रचुरता रहते हुए भी भारतीय अर्थव्यवस्था अभी भी पिछड़ी हुई है। जनसंख्या के दृष्टिकोण से विश्व में चीन के बाद दूसरा स्थान है। और कृषि के दृष्टिकोण से विश्व में पाँचवा स्थान है। भारत में विभिन्न तरह की खनिज सम्पदा पड़ी हुई है इसके बावजूद भारत एक निर्धन देश है" अतः ठीक ही कहा गया है कि - "भारत प्रचुरता के बीच निर्धनता की विरोधाभास प्रस्तुत करता है" (India Presents a paradox of Poverty in the midst of Plenty.) भारत के संबंध में M.L. Darling ने ठीक ही कहा है कि इस देश की मिट्टी धनी है किन्तु लोग निर्धन हैं। भारत में आर्थिक विकास की विशाल संभावनाओं के बावजूद यह अर्द्धविकसित या पिछड़ा हुआ देश है। भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ हैं:-

① आर्थिक विशेषताएँ:- भारत की आर्थिक विशेषताएं इस प्रकार हैं:- ① इन देशों में विकसित देशों की तुलना में प्रति व्यक्ति, वास्तविक आय बहुत कम होती है। ② आजीविका के लिए कृषि पर अत्यधिक निर्भरता पाई जाती है। ③ इन देशों में पूंजी की कमी पायी जाती है। ④ विकसित देशों की तुलना में इन देशों में प्राकृतिक साधनों का कम उपयोग होता है। ⑤ इन देशों में औद्योगीकरण का अभाव पाया जाता है। ⑥ पिछड़े देशों में धन एवं आय के वितरण में व्यापक विषमता पायी जाती है। ⑦ इन देशों में बेरोजगारी व्यापक रूप से विद्यमान रहती है। ⑧ साथ ही साथ इन देशों में उत्पादकता का स्तर भी नीचा होता है। जनसंख्या संबंधी विशेषताएँ:- 1- इन देशों में जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ती है। ⑪ लोगों की औसत आयु बहुत कम होती है।

P.T.O → क्रमशः

Indian Economy की विशेषताएं

(ii) इन देशों में औद्योगीकरण के अभाव में अधिकांश जनता गाँवों में रहती है 28/4/20

आर्थिक विशेषताएं :- पिछड़ी अर्थव्यवस्था में निम्नलिखित आर्थिक विशेषताएं पायी जाती है - (i) प्रायः इन देशों में तकनीकी ज्ञान का अभाव पाया जाता है (ii) इन देशों में प्रायः निम्नस्तर के तकनीकी का प्रयोग होता है (iv) साथ ही साथ यातायात के साधनों का अभाव पाया जाता है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक विशेषताएं :→ (i) प्रायः पिछड़ी अर्थव्यवस्था में शिक्षा का अभाव पाया जाता है। (ii) समाज में स्त्रियों का निम्न स्तर होता है (iii) इन देशों में लोगों का दृष्टिकोण परम्परागत अथवा रूढ़िवादी होता है। (iv) लोगों में स्वस्थ सामाजिक वातावरण एवं मनोवृत्ति का अभाव पाया जाता है। (v) इन देशों में राजनैतिक अस्थिरता तथा पिछड़ापन पाया जाता है। (vi) प्रायः इन देशों के लोगों में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना का अभाव पाया जाता है।

वास्तव में भारत एक अर्द्धविकसित एवं पिछड़ा हुआ देश है। लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था के पिछड़ेपन की प्रमुख विशेषताएं यह है कि यहाँ आर्थिक साधनों की प्रचुरता रखते हुए भी भारतीय अर्थव्यवस्था पिछड़ी हुई है तथा यहाँ के लोग निर्धन हैं। दूसरे शब्दों में - "भारत प्रचुरता के बीच निर्धनता का विरोधाभास प्रस्तुत करता है।"

[redacted]

उपशास्त्री - for 2020 exam.

Bhaskar 17/5/20

प्रो० - ब्रजेश पाठक
एसो० प्रो० - अर्थशास्त्र
R.N.S. College Sukhdeo Pur Neh.

'Economics'

शास्त्री-II nd Paper
For 2020 Exam
27/5/20

अच्छी मुद्रा पदार्थ के आवश्यक गुण या विशेषताओं का वर्णन करें? (Qualities of Good Money)

Ans:- वास्तव में समय के साथ-साथ मुद्रा का भी रूप बदलता रहा। सबसे पहले मनुष्य खाल, कौड़ी, चिड़ियों के पंख सीप और घोंघा को मुद्रा (Money) के रूप में प्रयोग करता था उसके बाद धात मुद्रा का प्रयोग हुआ, और अन्त में कागज मुद्रा और साख मुद्रा (Credit Money) हमलोगों के सामने है। यद्यपि सैद्धांतिक रूप से हर प्रकार के पदार्थ को मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जा सकता है किन्तु ऐसा होते हुए भी हर पदार्थ मुद्रा के कामों के लिए उपयोगी नहीं हो सकता है। उदाहरणस्वरूप प्राचीन मुद्रा - बकरी तथा खाल में वहनीयता, अनुरूपता, टिकाऊपन, तथा विभाजकता के गुणों का अभाव था, और उस काल मनुष्य को कठिनाइयों का अनुभव करना पड़ा था।

Prof. Jevons ने एक अच्छे मुद्रा पदार्थ के निम्न गुण बतलाये हैं:- जिसे संक्षेप में अंग्रेजी के शब्दों CUP-DISH-M द्वारा भी व्यक्त किया जाता है। एक अच्छे मुद्रा पदार्थों में निम्नलिखित गुण होना चाहिए:→

① सर्व स्वीकृति (General Acceptability):- मुद्रा के लिए चुनी गयी वस्तु ऐसी होनी चाहिए जिसे स्वीकृति और सर्वमान्यता हो, अर्थात मुद्रा पदार्थ ऐसा होना चाहिए, जिसे लोग विनिमय के माध्यम के रूप में बिना हिचकिचाहट के स्वीकार करते हैं। मुद्रा पदार्थों में अगर यह गुण नहीं है तो लोग उसे सहर्ष स्वीकार नहीं करेंगे। सोने, चांदी के सिक्के सर्वग्राह्य होते हैं, क्योंकि कोई भी व्यक्ति उन्हें बिना हिचकिचाहट स्वीकार करने के लिए तैयार रहता है। ② सुपरिचयता (Cognizability):- वास्तव में मुद्रा पदार्थ में सुपरिचयता का गुण होना परम आवश्यक है। जिसका अर्थ यह है कि मुद्रा पदार्थ को ऐसा होना चाहिए, जिसे लोग रूप, रंग, अथवा आवाज के आधार पर आसानी से पहचान लें। सोना, चांदी में सुपरिचयता का गुण विशेष रूप से विद्यमान रहता है, अतः लोग इन धातुओं की बनी मुद्राओं को आसानी से पहचान लेते हैं। ③ वहनीयता (Portability) प्राचीन मुद्रा में सबसे बड़ा दोष यही था कि उनमें अच्छे मुद्रा पदार्थ के गुणों का अभाव पाया जाता था। वास्तव में मुद्रा पदार्थ ऐसा होना चाहिए, जिसमें थोड़े वजन में ही अधिक मूल्य चला हो। सोने चांदी में यह गुण पाया जाता है पर मुद्रा (Paper Money) में यह गुण अधिक पाया जाता है। ④ अनुरूपता (Homogeneity) — वस्तु वस्तु मुद्रा में अनुरूपता या एकरूपता का अभाव पाया जाता था

P.T.O ———— क्रमशः ————

जिसके कारण उनको अच्छे मुद्रा पदार्थ नहीं कहा जा सकता था। जबकि सोना एवं चाँदी में अनुरूपता का गुण पाया जाता है, और इस दृष्टि से सोना तथा चाँदी अच्छे मुद्रा पदार्थ हैं।

(5) विभाज्यता (Divisibility):— विभाज्यता की दृष्टि से प्राचीन मुद्रा (गाय या बकरी) में इस गुण का भारी अभाव था, क्योंकि पशुओं या जानवरों को काटकर या तोड़कर विभाजित नहीं किया जा सकता था। ऐसा करने से उनका सारा मूल्य नष्ट हो जाता है। ऐसी मुद्रा छोटे भुगतानों के बिल्कुल अनुपयुक्त होती है। इस दृष्टिकोण से भी सोना चाँदी, अच्छे मुद्रा पदार्थ कहे जा सकते हैं।

(6) मूल्य में स्थिरता (Stability in Prices):→ मुद्रा पदार्थ में मूल्य स्थिरता का गुण होना अति आवश्यक है। मुद्रा जो स्वयं मूल्य मापक है, का मूल्य यदि अस्थिर रहता है, तो समाज में आर्थिक असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। सोना, चाँदी का उत्पादन तुलनात्मक रूप से कम होता है, अतः इनके मूल्य में भी तुलनात्मक स्थिरता रहती है, और इस दृष्टि से भी ये अच्छे मुद्रा पदार्थ माने जाते हैं।

(7) टिकाऊपन (Durability):→ मुद्रा पदार्थ शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु न होकर टिकाऊ होना चाहिए। शीघ्र नाशवान वस्तुओं में मूल्य संचय करने में कठिनाई होती है। अनाज जिसका प्राचीनकाल में मुद्रा के रूप में प्रयोग करते थे वह अनाज शीघ्र सड़ जाता है जैसे पशु, जैसे भेड़-बकरी बीमार आने पर शीघ्र ही मर जाते हैं। अतः ये अच्छे मुद्रा पदार्थ नहीं हैं। सोना चाँदी में टिकाऊपन का गुण होने के कारण इनमें मूल्य संचय सुविधाजनक है, और इसलिए ये अच्छे मुद्रा पदार्थ हैं।

(8) ढलाऊपन (Malleability):— मुद्रा पदार्थ ऐसा होना चाहिए जिसे आसानी से गलाकर मनचाहे सिक्के (Coin) ढाले जा सके। सोना, चाँदी इस दृष्टि से भी श्रेष्ठ मुद्रा पदार्थ हैं।

मुद्रा पदार्थ के उपरोक्त अच्छे गुणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सोना, या चाँदी अच्छे मुद्रा पदार्थ हैं। क्योंकि इनमें उपरोक्त सभी गुण अन्य मुद्रा पदार्थों की तुलना में अधिक पाये जाते हैं। आज विश्व के सभी देशों में कागज मुद्रा (Paper Money) प्रचलित है। इसे सरकार की शक्ति के बल पर सर्वमान्यता भी प्राप्त है।

Prof- Bhagwan

R.U.S. College Sunabeda Pithoda.

17/5/20

Economics (Market) शास्त्री Ist Pre
For 2020 Exam
17/5/20

17. बाजार से आप क्या समझते हैं? बाजार का वर्गीकरण करें?

Ans:- सामान्य मूल्य-सिद्धांत में बाजार का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। साधारण बोलचाल की भाषा में बाजार शब्द से किसी स्थान विशेष का महत्व होता है जहाँ पर वस्तुओं का क्रय एवं विक्रय होता है। किंतु अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का प्रयोग बहुत ही व्यापक अर्थ में किया जाता है। सुप्रसिद्ध विद्वान कूर्नो (Cournot) के अनुसार - "अर्थशास्त्र में बाजार शब्द से उस समस्त क्षेत्र का बोध होता है जहाँ बेचने वाले एवं खरीदने वालों में इस प्रकार का प्रतियोगितापूर्ण एवं स्वतंत्र संबंध हो, कि उस समस्त क्षेत्र में किसी वस्तु के मूल्य में एक होने की प्रवृत्ति पायी जाए।" (Economists understand by the term market-not any particular place in which things are bought and sold but the whole of any region in which buyers and sellers are in such a free intercourse with each other that the prices of the same goods tend to equality easily and quickly.) इस प्रकार अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का प्रयोग किसी स्थान विशेष के लिए जहाँ क्रेता एवं विक्रेता सौदा करने के लिए जमा होते हैं, नहीं किया जाता वरन् बाजार शब्दों से किसी वस्तु के क्रेताओं एवं विक्रेताओं के उस समूह का बोध होता है, जहाँ आपस में स्वतंत्र एवं प्रतियोगितापूर्ण संबंध हो। बाजार की केयनक्रास (Cairncross) ने भी निम्न तरह से परिभाषित किया है:- "अर्थशास्त्र में बाजार का तात्पर्य क्रेताओं तथा विक्रेताओं के बीच किसी साधन अथवा वस्तु के लेन-देन के जाल-सूत्र से है।" (The market in Economics is simply the net work of dealings in any factor or product-between buyers and sellers.) इससे स्पष्ट होता है कि अर्थशास्त्र में बाजार किसी स्थान अथवा क्षेत्र विशेष का बोध नहीं होता है। इसका तात्पर्य किसी एक वस्तु अथवा कई वस्तुओं से है, जिनके क्रेताओं एवं विक्रेताओं के बीच प्रतियोगितापूर्ण संबंध रहता है, जिनके फलस्वरूप एक समय में किसी एक वस्तु का मूल्य सर्वत्र एक समान रहता है। उदाहरणस्वरूप सोने का बाजार, गेहूँ का बाजार इत्यादि।

बाजार का वर्गीकरण तीन दृष्टिकोण से किया जाता है:- (A) स्थान अथवा क्षेत्र के अनुसार (B) समय के अनुसार (C) कार्य के अनुसार। (A) स्थान अथवा क्षेत्र के अनुसार बाजार को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है:- (i) स्थानीय बाजार (ii) राष्ट्रीय बाजार (iii) अन्तर्राष्ट्रीय बाजार।

क्रमशः

P.T.O.

शास्त्री - Ist Part Economics

(1) स्थानीय बाजार :- जब किसी वस्तु के क्रेता एवं विक्रेता किसी स्थान विशेष में ही पाये जाते हैं, तो उसे स्थानीय बाजार कहा जाता है। साधारणतया शीघ्र नष्ट होनेवाली वस्तुओं का बाजार स्थानीय होता है, जैसे सब्जी, दूध, फल सब्जी इत्यादि स्थानीय बाजार के प्रमुख उदाहरण हैं।

(2) राष्ट्रीय बाजार (National Market) :- यदि किसी वस्तु का क्रय एवं विक्रय केवल देश भर में ही फैले हुए हैं, अर्थात उस वस्तु के क्रेता एवं विक्रेता उस देश भर में ही फैले हुए हों, तो उसे राष्ट्रीय बाजार कहा जाता है। उदाहरण के लिये धोती, गांधी टोपी, या चूड़ियों का बाजार हमारे देश भर में ही पाया जाता है। (3) अन्तर्राष्ट्रीय बाजार :- यदि किसी वस्तु के क्रेता एवं विक्रेता सम्पूर्ण विश्व में विस्तृत हों तो उस वस्तु के बाजार को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार कहते हैं, जैसे सोना, चाँदी, गेहूँ आदि वस्तुओं की मांग अन्तर्राष्ट्रीय होती है, जिससे इन वस्तुओं का बाजार विश्वव्यापी हो जाता है। (B) समय के अनुसार - प्रतियोगिता की दृष्टि से बाजार को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है :-

I- पूर्ण बाजार :- जिस बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता पायी जाती है, उसे पूर्ण प्रतियोगिता का बाजार कहा जाता है। साधारणतया पूर्ण प्रतियोगिता का बाजार उसे कहते हैं जिसमें बहुसंख्यक क्रेता एवं विक्रेता हों सभी पूर्णतः एक ही प्रकार के वस्तु का विक्रय करते हों, तथा सभी एक दूसरे का निकट संपर्क में हों तो ऐसे बाजार को पूर्ण बाजार कहते हैं। (2) अपूर्ण बाजार :- वास्तविक परिवेश में पूर्ण प्रतियोगिता का अभाव पाया जाता है। क्रेताओं एवं विक्रेताओं को बाजार का पूर्ण ज्ञान नहीं रहता है और उनकी संख्या भी बहुत अधिक नहीं रहती है। इसके फलस्वरूप किसी वस्तु का मूल्य बाजार के भिन्न-भिन्न भागों में अलग-अलग रहता है ऐसे बाजार को अपूर्ण बाजार (Imperfect Market) कहते हैं। (C) समय के अनुसार बाजार का वर्गीकरण :- समय के अनुसार बाजार को चार भागों में विभाजित किया जाता है :- (1) दैनिक बाजार :- इस प्रकार के बाजार में वस्तु की पूर्ति उसके stock तक ही सीमित रहते हैं। इसके पूर्ति में किसी भी तरह का परिवर्तन नहीं किया जाता है, अतः इस बाजार में वस्तु की मांग बढ़ जाने से इसकी पूर्ति में समय कम होने के कारण मांग के अनुसार परिवर्तन नहीं किया जा सकता। अतः इस बाजार में मांग में कमी या वृद्धि के साथ-साथ मूल्य में भी कमी या वृद्धि होती रहती है। (II) अल्पकालीन बाजार :- अल्पकालीन बाजार में किसी वस्तु की पूर्ति में मांग के अनुसार कुछ हद तक परिवर्तन किया जा सकता है इसलिए अल्पकालीन बाजार में भी मूल्य के निर्धारण में पूर्ति की अपेक्षा मांग की ही प्रधानता रहती है। (3) दीर्घकालीन बाजार :- जिस अवधि में किसी वस्तु की पूर्ति में मांग के अनुसार परिवर्तन का पर्याप्त अवसर रहता है, उस अवधि के बाजार को दीर्घकालीन बाजार कहते हैं। (4) अति दीर्घकालीन बाजार :- अति दीर्घ कालीन बाजार का संबंध इतनी लम्बी अवधि से रहता है जिसके अन्तर्गत उपयोग, आय, वितरण एवं पूंजीगत आदि को ध्यान में रखकर पूर्ति में हर-फेर परिवर्तन किया जा सकता है उसे ही अति दीर्घकालीन बाजार कहते हैं।

Priyanka Shukla